International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

सुरेखा सदाना कि आध्यात्मिक दुनिया व रंगों का जादुई सम्मोहन

डॉ.(श्रीमती) कुमकुम श्रीवास्तव [1]
टीना पोरवाल *[2]
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, किला मैदान, इन्दौर (म.प्र.)

सुरेखा का जन्म 1970 में राजस्थान में हुआ था। बी.ए. चिकित्साशास्त्र में किया लेकिन रुझान चित्रकला की ओर रहा। बचपन से ही सुरेखाजी को पेन्टिंग का बेहद शोक था। उनके दिमाग में जो भी चलता रहता था वह उसे केनवास पर उतार देती थी। डॉक्टर परिवार होने के नाते माता–पिता उन्हे डॉक्टर ही बनाना चाहते थे। ग्रेज्युएशन के बाद उनकी शादी हो गई। शादी के बाद सुरेखाजी ने अपने पेशन, कला की तरफ ज्यादा ध्यान दिया।

चित्र क. 01

सुरेखाजी पिछले पन्द्रह सालों से अपने जीवन का अधिकांश समय कला को ही समर्पित कर रही है। 2003 से सुरेखाजी अपने चित्रों को प्रदर्शित करती रही है। सुरेखा ने कला में डिप्लोमा के साथ–साथ ध्यान, योग आदि का भी अभ्यास किया और अपनी कला में महारत हासिल की है। उन्होंने कई वर्कशॉप, केम्प में भाग लिया और कई छोटे–छोटे कोर्सेस चित्रकला से सम्बन्धित भारत व विदेशों में किए।

सुरेखा का मानना है कि कला एक विशिष्ट प्रकार के सुख की अनुभूति प्रदान करती है। उनके चित्रों में उनकी ध्यान साधना का अनुभव दिखाई देता है। सुरेखा का रचनात्मक पथ लगातार बदलता रहता है, शुद्ध अलंकरण से दूर, अर्द्ध यथार्थवाद वैचारिक रुप में विभिन्न आकृतियों में एक्सपीरिमेन्ट उनके चित्रों की विशेषता रही। सुरेखा के अनुसार उनकी कला में आध्यात्मिकता,

प्रकृति का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रकृति का सौन्दर्य वर्णन करती है व उनके भीतर की नई खोजों को आम जनता तक पहुँचाने का एक साधन बन जाती है।

सुरेखा का कहना है कि मेरे चित्र बनाने का लक्ष्य अपनी आध्यात्मिकता के केन्द्रिय खोज को चित्रित करना है। बहुत ही छोटी उम्र से में भारतीय आध्यात्मिक पुस्तके पढ़ने की शोकिन रही हूँ। लेकिन उस उम्र में मुझे उन जादुई शब्दों के पीछे छुपे असली दर्शन के बारे में पूर्ण जानकारी नहीं थी। जब में बड़ी हुई तब मैने इन पुस्तकों से सम्बन्धित सिद्धान्तों और शिक्षाओं को अपने वास्तविक जीवन से अलग करना शुरु कर दिया। अपने आध्यात्म जीवन के कुछ समय बाद मुझे महसूस हुआ कि मेरे जीवन का एक उच्च लक्ष्य है और सामान्य जीवन से दूर एक चेतना है।

चित्र क. 02

इसी लक्ष्य को पाने के लिए मैंने अपने भीतर के दरवाजे दुनिया के लिए अनावृत किए और कुण्डलिनी, चक्र, यंत्रों की रहस्यमय अवधारणाओं और ध्यान के अन्य उपकरणों को पार किया। पिछले कुछ साल मेरे आध्यात्म एवम् कलाकार जीवन के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहे, जब से मैने लगातार और व्यवथित रुप से ध्यान योग शुरु किया। जैसे–जैसे में अपने आध्यात्मक जीवन के पास जाती गयी वैसे–वैसे में अपनी कला के पास आती गयी। अब में और अधिक विश्वास और स्पष्टता के साथ केनवास पर मेरे भीतर के अनुभवों और विचारों को व्यक्त कर पाती हूँ। मेरे लिए ध्यान और पेन्टिंग दोनों आध्यात्मक से मुझे जोड़े रखने के तरीके है और दोनों अपने आप में पूर्ण रुप से सुन्दर व आन्नददायी है। जब मैं सृजन की प्रक्रिया करती हूँ तो में अपने चित्रों के साथ एक हो जाती हूँ और यह क्रिया मुझे अपने वर्तमान क्षण में मन की शांति प्रदान करती है। सुरेखाजी के अनुसार कला सिखाने की जरुरत नहीं है, दिल के भावों को केनवास पर उतारना ही कला है। वह कहती है कि अच्छा कलाकार बनने के लिए मिडियम और टेक्निकल वस्तुओं की तरफ ध्यान देना जरुरी है। पेन्टिंग करते समय वह हल्का संगीत सुनना पंसद करती है।

सुरेखा की पेन्टिंग में हर बार नये आयाम दिखाई देते है, ऐसा शायद इसलिए होता है क्योंकि उनमें जीवन और समाज को आध्यात्मिक व दार्शनिक नजरियें से देखने, समझने और पकड़ने की सायास कोशिश की गई है। सुरेखा ने एक दार्शनिक भावभूमि पर खड़े होकर चित्रों को बनाया है। दैनंदिन जीवन के आध्यात्मिक प्रसंगों व प्रतीकों को दार्शनिक स्वरुप देते हुए सुरेखा ने जो चित्र बनाये है, वह सहज ही ध्यान खीचते है। खास बात यह है कि सुरेखा ने अपने चित्रों में जिन प्रतीकरुपों का उपयोग किया है, वह मौजूदा आधुनिक समय में न सिर्फ लगभग भुला दिए जा रहे है बल्कि उन्होंने अपने वास्तविक अर्थों को भी जैसे खो दिया है, सुरेखा के चित्रों में उन्हे समसामायिक अर्थों में रेखांकित किया जा सकता है।

कुछ कलाकृतियों में गणितीय, गोलाकार, वृत्त, त्रिज्यानुमा आकृतियों चौकोर लाइनों के माध्यम से चिन्तन के आध्यात्मिक स्वरुपों को दर्शाया गया है तो कुछ कला कृतियों में कमल के फूल और पंखुड़ियों के माध्यम से तांत्रिक आर्ट को दर्शाया गया है। इसके अलावा उनकी कलाकृतियों में भगवान शिव, शक्ति, पुरुष प्रकृति, गौतम बुद्ध दरविश, जीवनचक्र, कुडलिनी यंत्र और आध्यात्मिक शक्तियों के माध्यम को भी दर्शाया गया है। सुरेखा ऐक्रेलिक रंगों का केनवाास पर उपयोग करती है अधिकतर शान्त रंगों का उपयोग करती है नीले का प्रयोग चित्रों में ज्यादा देखने को मिलता है। एक ही रंग के कई तान का प्रयोग देखने को मिलता है। मोनोक्रोम पेन्टिंगस ज्यादा बनाई है।

कला के प्रति प्रेरणा उन्होने प्रकृति से प्राप्त की, तो प्रकृति ने ही उन्हें कला का पहला पाठ भी पढाया। बाद में अपनी लगन और निरन्तर मेहनत से उन्होने अपनी कला यात्रा को न सिर्फ व्यवस्थित रुप दिया, बल्कि अपने काम से लोगों को अचंभित करते हुए तमाम प्रशंसाएं भी प्राप्त की। उन्होंने समसामायिक सर्दभं में पौराणिक व आध्यात्मिक प्रतीक रुपों का उपयोग करते हुए चित्र बनाये है, जिनमें उन्होंने परम्परा तथा आधुनिकता के बीच एक सामंजस्य देखने व पहचानने की कोशिश की है। अपने चित्रों के जरिये वह सांस्कृतिक नैरतर्य की चेतना को बनाये रखने की एक चेष्टा कर रही लगती है एक अकेली चेष्टा। सेुरखा सदाना के चित्र न केवल अपनी अंतर्वस्तु में महत्वपूर्ण है, बल्कि फार्म में भी खास है। सुरेखा की चित्रकृतियों में जीवन के द्वंत को बखूबी दर्शाया गया है। सुरेखा की चित्र कृतियों में प्रतीक भले ही आध्यात्मिक व दार्शनिक जगत के हो, लेकिन उनके विषय में आधुनिक है और इसलिए उनमें एक समकालीनता है।

सुरेखा की चित्रकृतियां अपनी कला–भाषा और अंतर्वस्तु से पवित्रता का बोध कराती है। इन चित्रों को सुरेखा ने बहुत आध्यात्मिक भाव से चित्रित किया है। उनके चित्रों में यह विशिष्टता

देखी जा सकती है कि वहां दीप्त रिक्तता से प्रक्षिप्त बिंब रुप एक संकेत की तरह दिखता है जैसे उस क्षेत्र में पहुँचने का प्रलोभन दे रहे हो। अपने इस अनुभव को मूर्तरुप प्रदान करने के लिए सुरेखा स्पेस–विस्तार की तकनीक अपनाती है। चित्र सतह पर बिम्ब के ऊपर बिंब रचती है।

चित्र क. 03

वास्तव में एक कलाकार के रुप में अद्वैतवाद का सिद्धांतकार नहीं हो सकता। वह पायेगा कि अद्वैतवादी होते हुए भी वह मायारुपिणी दुनिया के प्रति प्रेम में पगा हुआ है। वह पायेगा कि वह इस प्रत्यक्ष दुनिया से अपने को जुड़ा हुआ पाता है और जब तक वह कलाकार है तब तक इससे भाग नहीं पाता। इस अर्थ में वह उस रहस्यवादी के निकट अपने को पाता है जो इस दुनिया से भाग सकता है, भागता भी है – मगर रहता इसी में है, बल्कि आनंदविभोर होकर रहता है, और इसमें स्वप्नों को देखता है और उनके पूरा होने की उम्मीद भी करता है। सुरेखा सदाना के चित्र इसी स्थिति को दर्शाते है।

पुरस्कार व सम्मान

2016 – सोसायटी आईक्रान अर्वाड, न्यू दिल्ली।

2016 – 19th ऑल इण्डिया आर्ट एक्जिबिशन, तिलक समरक फॉउडेशन, पूना।

2015 – हरियाना स्टेट इमीग्रीन आर्टीस्ट अवार्ड

2015 – प्रफुल्ला डनुकार आर्ट फाउन्डेश (पेन्टिंग, केटेगरी), मुम्बई

2014 – मिनिस्टरी ऑफ कलचर गर्वरमेन्ट ऑफ इण्डिया, सिनियर फेलोशिप।

2014 – हायली कमन्डेड अर्वाड 74th ऑल इण्डिया ऑर्ट एक्जीबिशन बाय हैदराबाद आर्ट सोसायटी, हैदराबाद

2013–1 th ऑल इण्डिया आर्ट एक्जिबिशन

2013 – एस.एम. पण्डित अर्वाड, प्रोफेशनल केटेगरी, कर्नाटक।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

संदर्भ ग्रथ सुचीः–

[1] www.surekhasadana.com

[2] Dainik Bhaskar Sunday 7 Jun 2010 Gurgaon
[3] www.jagaran.com
[4] aat yantik blog,31 may 2013